नवउदारवाद और भारतीय शासनतंत्र

पूनम कुमारी

उदारवाद से अनुप्रेरित नवउदारवाद के अग्रदूत अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन थे ओर इसी वजह से इसे ''विल्सनवाद'' के रूप में भी जान जाता है, जिन्होंने इसे आदर्श रूप दिया। उदारवादी यह भी मानते हैं कि राज्यों के बीच संपर्क ;प्दजमतंबजपवदेद्ध केवल राजनीतिक अथवा सुरक्षा (उच्च राजनीति) के मामलों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि इनमें आर्थिक अथवा सांस्कृतिक (निम्न राजनीति) मामलों के लिए भी आपस में संपर्क होते रहता है, चाहे वह वाणिज्यिक कंपनियों, संगठनों या व्यक्तियों के माध्यम से ही हो। नवउदारवाद, उदार सोच के लिए प्रगति है और यह तर्क देता है कि अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ राष्ट्र–राज्यों को अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था में सफलतापूर्वक सहयोग करने के लिए अनुमति देती हैं। वैश्विक स्तर पर जब सोवियत संघ का पराभाव हुआ और चीन, वियतनाम तथा भारत में पश्चिम बंगाल जैसे कम्युनिष्ट शासित राज्यों ने उदारीकरण को अपनाया तो नवउदारवाद को एक तरह से पंख लग गया। वस्तुतःसन् 1980 के दशक की नवउदारवादी शुरुआत बीसवीं सदी के अंत तक अपने विश्वव्यापी सैलाब में सभी को समाहित करने लगे। आज नवउदारवाद को पूँजीवाद, राज्य और समाज के मानवीय सामाजिक–आर्थिक जीवन के खास संबंधों और रूपों को स्वीकृत किया जा रहा है।